SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

प्राथमिक स्तर पर विधर्थियों में मूल्य शिक्षा एवं अभिवृत्ति निर्माण की आवश्यकता

निश्चल कुमार
शोधार्थी
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय,
बरेली,(उ0प्र0)

डॉ0 बी0आर0 कुकरेती
शोध पर्यवेक्षक
एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय,
बरेली, (उ0प्र0)

सारांश

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली संक्रमण के दौर से गुजर रही है। परीक्षा के लिए छात्रों को तैयार करना तथा विभिन्न विषयों में मूल्यांकन करना आज शिक्षा का उद्देश्य हो गया है। वर्तमान प्रणाली का दोष यह हो गया है कि इसने शिक्षा को साधन एवं साध्य दोनों बना दिया है। सूचना को ज्ञान का पर्याय कहा जाने लगा है, जिसके कारण सूचनात्मक ज्ञान में वृद्धि हो रही है लेकिन राष्ट्रीय चरित्र एवं विवेक में अवमूल्यन हो रहा है। इससे शैक्षिक पारिस्थितिकी में असंतुलन हो रहा है एवं सम्पूर्ण शैक्षिक परिदृश्य अवमूल्यित हो रहा है। शिक्षा मूल्योन्मुख न होकर मूल्य विमुख है। शिक्षा से सार्वभौमिक मानवीय मूल्य– सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम, अहिंसा का पूर्णतः विलोप होता नजर आ रहा है, क्योंकि मानव जीवन की गुणवत्ता का मानवीय मूल्यों से अनन्य सम्बन्ध है। मूल्य विमुख शिक्षा प्रणाली का दुष्प्रभाव यह है कि भौतिकवादी प्रवृत्तियों एवं उपभोक्तावादी समाज को प्रोत्साहित कर रही है, दूसरी तरफ एकांगी होकर आध्यात्मिकता से उदासीन होती चली जा रही है। मानव जीवन में संतुलन के लिए आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। धन की सर्वोच्चता एवं श्रेष्ठता मनुष्य को मानसिक शान्ति नहीं दिला सकती। सार्वभौमिक मानवीय मूल्य विहीन शिक्षा का मूल्य शून्य है, क्योंकि मूल्यों को शिक्षा से विच्छेदित नहीं किया जा सकता है।

की वर्ड्स : *शिक्षा प्रणाली,सांस्कृतिक प्राणी,शैक्षिक पारिस्थितिकी*

मनुष्य एक सामाजिक, सांस्कृतिक प्राणी है। इसका समाज में अनन्य सम्बन्ध होता है। व्यक्ति, समाज व मूल्य में पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्ध व प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए प्रख्यात समाजशास्त्री प्रो0 आर0के0 मुखर्जी ने इन्हें एक दीपक की बत्ती, तेल और ज्योति कहा है।

स्पष्टतः तेज (समाज) के बिना बत्ती (व्यक्ति) अधूरी है, और ज्योति (मूल्यों) के बिना बत्ती (व्यक्ति) और तेज (समाज) दोनों ही अर्थहीन हैं, अर्थात् अन्तिम रूप में सार्वभौमिक मानवीय मूल्य ही समाज व व्यक्ति के जीवन में ज्योति प्रज्वलित करते हैं। यदि समाज अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहता है तो यह आवश्यक है कि व्यक्तित्व के परम

सर्वोच्च मूल्यों की नियमित रूप से पूर्ति करता रहे। व्यक्तित्व की सर्वोत्तम खोज सत्यम्, शिवम् व सुन्दरम् उच्चतम आध्यात्मिक मूल्य है। इसी सर्वोत्तम खोज के आधार पर सामाजिक सम्बन्धों व संस्थाओं की सृष्टि और पुनः सृष्टि होती है। सम्पूर्ण मानव समाज व मानव कल्याण के लिए इन मूल्यों का सम्बर्द्धन एवं संरक्षण आवश्यक है, क्योंकि जब तक व्यक्ति को सांस्कृतिक मूल्यबोधों की पहचान नहीं होगी और उन मूल्यों की पहचान के माध्यम से मनुष्य के आन्तरिक व बाह्य जगत की प्राकृतिक नियमावली और प्राकृतिक साहचर्य के साथ हम नहीं जुड़ेंगे, तब तक मूल्योन्मुख समाज की कल्पना व्यर्थ है। (जोशी–2002)

मूल्योन्मुखी शिक्षा की प्रस्तुति में हमें निर्देशात्मक नहीं होना चाहिए और अन्वेषण की विधियों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा सामाजिक दबाव व नियंत्रण के द्वारा मूल्यों के अवमूल्यन को रोकना चाहिए, क्योंकि मूल्योन्मुख शिक्षा ही सही अर्थों में जीवन की प्रयोगशाला है एवं शिक्षा आन्तरिक तथा परिभाषात्मक रूप से मूल्योन्मुख है।

शिक्षा में मानवीय मूल्य भारत में ही नहीं वरन् विश्व के अनेक देशों में शिक्षा की अद्यतन विषय वस्तु है। इसने भारत और विश्व के अधिकांश देशों में बहुतेरे सामाजिक यथार्थ, आध्यात्मिक गुरूओं, दार्शनिकों, शिक्षा शास्त्रियों, सामाजिक नेताओं और प्रबुद्ध नागरिकों के विवेक को हिला दिया है और उत्तेजित कर दिया है। उन सभी लोगों ने स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के अन्दर शिक्षा में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है, जो बच्चे कल के भावी नागरिक बन जायेंगे।

आजकल चारों तरफ मानकहीनता विस्तृत रूप से फैली हुई है। हम सर्वत्र मतभेद, अन्तर्द्वन्द्व, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, इन्द्रिय जनित ज्ञान संस्कृति का विभाजन, हिंसा, वृद्धों का अपमान, अधिकार, वृद्ध रीति और परम्परा, गैर जिम्मेदारी का प्रचार, विरोध हीनता, रीढ़हीनता नैतिकता का ह्रास, मानवीय सम्बन्ध और समाज की अति आवश्यक संस्थाओं में अधिकतर प्रमाण पाते हैं। भारत में विशिष्ट रूप से पिछले चार दशकों से चरित्र, नैतिकता, कार्य संस्कृति, मानवीय मूल्यों और आदर्शों में तेजी से गिरावट आयी है। यह गम्भीर और अत्यधिक खेदजनक स्थिति है। भारत प्राचीन काल से ही आध्यात्मिकता, नैतिक संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में विश्व गुरु था। हम इस शताब्दी के सभी महान् धर्म गुरुओं, सामाजिक सुधारकों, सांस्कृतिक और शैक्षिक नेताओं, दार्शनिकों के लेखन और वार्तालापों में गम्भीर चिंतन पाते हैं, जो उत्कृष्ट रूप से वर्णित होते हैं। फिर भी पिछले चार दशकों में हमारे प्रमुख आध्यात्मिक गुरुओं, धार्मिक गुरुओं एवं दार्शनिकों ने आधुनिक सामाजिक सांस्कृतिक संकट से बचने के लिए एक रास्ता दिखाया है। उन्होंने अपने यहाँ चल रहे स्कूल के विद्यार्थियों के अन्दर शिक्षा में मानवीय मूल्यों की अनुभूति की आवश्यकता को शुरू कर दिया है। हमारे देश में आजादी के बाद से शिक्षा में मानवीय मूल्यों पर बल का अधिक प्रयोग शुरू हो चुका है।

एक समाजशास्त्रीय तथ्य है कि जब प्रयोगकर्ता अपने स्कूलों में शिक्षा में मानवीय मूल्यों को अपना आदर्श बना है, तो वस्तुतः उन महान् आध्यात्मिक गुरुओं, दार्शनिकों, धार्मिक गुरुओं एवं शिक्षा शास्त्रियों को अपने क्षेत्र के, अपने प्रयोग के अनुभवों का सहयोग नहीं लेता है, जो स्वयं इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। यद्यपि संघीय मानव विकास मंत्रालय ने 1980 में सभी स्कूलों, प्रशिक्षण संस्थानों एवं शैक्षिक शोध केन्द्रों को मूल्य शिक्षा के कार्यक्रमों में गम्भीरता के साथ भाग लेने का निर्देश दिया। फिर भी हिन्दू आध्यात्मिक गुरुओं, समाज सधारकों– जैसे स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, श्री अरविन्द, जे0कृष्णमूर्ति, के0एम0 मुंशी, श्री सत्य साईं बाबा, श्री चिन्मयानन्द, श्री साधु वासवानी द्वारा चलाये जा रहे स्कूल इस बारे में चिन्तित नहीं हैं। वस्तुतः हमारे देश में मूल्य शिक्षा के विभिन्न उपागमों का प्रयोग जनित आंकड़ा उपलब्ध नहीं है।

चिन्तक विश्व के किसी भौगोलिक क्षेत्र में रहकर ऐसा चिन्तन कर सकता है जिसकी सार्वभौमिक अनुप्रयोगात्मक उपादेयता अन्य संदर्भ में भी हो सकती है। श्री सत्य साईं बाबा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की शिक्षा में नव प्रयोग के लिए ऐसे ही चिन्तक हैं।

श्री सत्य साईं बाबा के चिन्तन में निहित सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों– सत्य, धर्म, प्रेम, शान्ति, अहिंसा के बिना शिक्षा का मूल्य शून्य है। क्योंकि शिक्षा एवं सार्वभौमिक मानवीय मूल्य एक–दूसरे के पूरक हैं और शिक्षा आन्तरिक रूप से तथा परिभाषात्मक रूप से मूल्योन्मुखी है। लेकिन जब तक व्यक्ति को सांस्कृतिक मूल्यबोधों की पहचान नहीं होगी, और उन मूल्यों की पहचान के माध्यम से मनुष्य के आन्तरिक व बाह्य जगत की प्राकृतिक नियमावली और प्राकृतिक साहचर्य के साथ हम नहीं जुड़ेंगे, तब तक किसी मूल्योन्मुख समाज की कल्पना व्यर्थ है। शिक्षा नीति, अर्थनीति व राजनीति से नीति व नैतिकता समाप्त हो रही है या हो चुकी है। परिणामतः सम्पूर्ण शैक्षिक परिस्थितिकी का अवमूल्यन हो रहा है। अवमूल्यन को रोकने हेतु यह आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को मूल्योन्मुख शिक्षा के एकीकृत उपागम पर केन्द्रित कर छात्रों में सकारात्मक अभिवृत्ति परिवर्तन हेतु प्रेरित करें, जिससे छात्रों को ऐसी प्रेरणा मिले कि उनमें ज्ञान और साहस के प्रति, कार्य एवं व्यापकता के प्रति और उसके प्रति जो वैयक्तिक एवं सामूहिक पूर्णता के लिए सहायक है, तीव्र जिज्ञासा जागृत हो। इन लक्ष्यों के प्राप्ति के सर्वोत्तम साधनों में से एक साधन मूल्योन्मुखी शिक्षा है। निष्कर्षतः मूल्योन्मुखी शिक्षा के कार्यक्रम को विज्ञान और मूल्य के बीच के सम्बन्ध पर बल देना चाहिए। अपने मूल्यों की प्रस्तुति में हमें निर्देशात्मक नहीं होना चाहिए और अन्वेषण की विधियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। मूल्योन्मुखी शिक्षा का प्रथम और अन्तिम संदेश यह होना चाहिए कि लोगों में सर्वोत्तम शिव (कल्याण) संकल्प का विकास हो, क्योंकि मूल्योन्मुखी शिक्षा ही जीवन की प्रयोगशाला है।

मानवीय मूल्यों द्वारा अभिवृत्ति निर्माण–

मानवीय मूल्यों की शिक्षा, अनिवार्य या ऐच्छिक रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके नहीं दी जा सकती। मूल्य शिक्षा या नैतिक शिक्षा नाम से निश्चित समय में, जैसा कि अर्थशास्त्र या राजनीतिशास्त्र की शिक्षा कुछ व्याख्यान देकर दी जाती है, वैसे नहीं दी जा सकती है। यह समाजोपयोगी उत्पादक कार्य जैसा भी नहीं दिया जा सकता है। इसमें केवल कुछ संतों का आदर्श, धार्मिक प्रार्थना, मंत्रों एवं सूत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है। बल्कि यह एक व्यापक कार्यक्रम है। यह मानव निर्माण का सजीव विज्ञान है, जिसमें कार्यात्मक रूप से आध्यात्मिकता, विज्ञान तकनीकी, सामाजिक कार्य, नैतिकता, आधुनिकता, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद एवं वैज्ञानिक मानवतावाद को सम्मिलित किया जाता है। यह केवल स्कूल पाठ्यक्रम में ही नहीं वरन् कालेज, विश्वविद्यालय, अनौपचारिक शिक्षा संस्थाओं एवं शोध केन्द्रों में भी सम्मिलित किया जाता है। शिक्षा में मानवीय मूल्य कार्यक्रम में सकारात्मक अभिवृत्तियों को विकसित किया जाता है एवं नकारात्मक अभिवृत्तियों का सकारात्मक अभिवृत्तियों में रूपान्तरण किया जाता है।

शिक्षा में मानवीय मूल्य कार्यक्रम के अन्तर्गत नकारात्मक अभिवृत्तियों को सकारात्मक अभिवृत्तियों में रूपान्तरण करने के लिए निम्नलिखित तकनीक का प्रयोग किया जाता है:–

1. नियम आदर्श विधि
2. प्रभाव विधि
3. सदृशीकरण विधि
4. साहचर्य विधि
5. संवातन विधि

6. साक्षात्कार विधि
7. कहानी–कथन विधि
8. नीति–कथा विधि
9. मनो–अभिनय विधि
10. भूमिका–निर्वाह विधि

1. नियम आदर्श विधि–

इस विधि में नियम, मानक, आदर्श एवं मूल्यों पर बल दिया जाता है। शिक्षक एवं अभिभावक मिलकर उच्च स्तरीय स्वस्थ पर्यावरण सृजित करके छात्रों के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जिसका सभी छात्र अनुसरण करते हैं। उच्च स्तरीय स्वस्थ पर्यावरण ही वैचारिक प्रदूषण फैलने से रोकता है।

2. प्रभाव विधि–

इस विधि में शिक्षक छात्रों की अभिवृत्ति को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। जब कोई छात्र गलत कार्य करता है तो शिक्षक उसको अस्वीकृत करता है। वह छात्रों को सानिध्य प्रदान करता है और समीपता नियंत्रण विधि द्वारा प्रभावित करता है। शिक्षक मनोवृत्ति द्वारा छात्रों की अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। इस विधि में प्रभुत्व के आधार पर प्रभावित करने से वांछित परिणाम नहीं मिलता है।

3. सदृशीकरण विधि–

इस विधि में बच्चा अपने अभिभावक से सदृशीकरण करता है, क्योंकि बालक और उसके माता–पिता में भावनात्मक प्रेम होता है। माता–पिता ही साधिकार दण्ड या पुरस्कार प्रदान कर सकते हैं। बालक ही स्वयं को ध्रुव, प्रह्लाद, एकलव्य, लव, कुश, मीराबाई, लक्ष्मीबाई के रूप में स्थापित कर अपने अन्दर मूल्य विकसित कर सकते हैं।

4. साहचर्य विधि–

इस विधि द्वारा बुरी आदतों एवं नकारात्मक अभिवृत्तियों को साहचर्य एवं अनुबन्धन द्वारा दूर किया जा सकता है। उदाहरणार्थ यदि किसी छात्र के अन्दर संस्कृत विषय के प्रति ऋणात्मक अभिवृत्ति है, तो शिक्षक छात्रों को संस्कृत श्लोक गाकर, संस्कृत की पुस्तक से कहानी सुनाकर छात्रों के अन्दर संस्कृत के प्रति रूचि विकसित कर सकता है। इसी प्रकार गणित में रूचि उत्पन्न करने के लिए गणितीय खेल प्रस्तावित कर सकता है।

5. संवातन विधि–

इस विधि द्वारा छात्रों को कभी–कभी अपनी भावनाओं एवं अभिवृत्तियों को कक्षा के अन्दर मौखिक संवाद द्वारा संवादित करना चाहिए। किसी प्रकरण विशेष पर निबन्ध लिखने का अवसर देना चाहिए, जिसे बाद में कक्षा में छात्रों के द्वारा अर्थपूर्ण संवाद स्थापित करना चाहिए। इस विधि में शिक्षक के सहानुभूतिपूर्ण एवं वस्तुनिष्ठ व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। किन्हीं परिस्थितियों में यदि शिक्षक गलत है तो उसे प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाना चाहिए।

6. साक्षात्कार विधि–

अभिवृत्ति निर्माण की यह महत्वपूर्ण विधि है। साक्षात्कार एक प्रकार से मौखिक प्रश्नावली है। इसके अन्तर्गत उत्तर लिखने के बजाय आमने–सामने की स्थिति में विषयी मौखिक उत्तर देता है। यह संरचित एवं असंरचित दोनों परिस्थितियों में हो सकता है।

7. कहानी कथन विधि–

इस विधि में शिक्षक छात्रों के सम्मुख प्रभावशाली ढंग से कहानी प्रस्तुत करता है। कहानी का सम्बन्ध निश्चित मूल्यों एवं आदर्शों से होता है। अतः शिक्षक कहानी के माध्यम से छात्रों में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करता है। कहानी कथन विधि में महत्वपूर्ण अवयव यह है कि कहानी कथन में क्रमबद्धता, सामाजिकता एवं शिक्षक का स्वामित्व होना चाहिए।

8. नीति कथा विधि–

इस विधि में शिक्षक छात्रों के सम्मुख एक संक्षिप्त नीति कथा अथवा उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त पाठ प्रदर्शन भी करता है, जो छात्रों को मूल्योन्मुख बनाता है। इस विधि द्वारा छात्रों में तर्क शक्ति का विकास, मूल्य निर्णय का विकास, मूल्य स्पष्टीकरण की योग्यता का विकास एवं सम्प्रेषण कौशल का विकास किया जा सकता है, जिसके फलस्वरूप स्वयं के मूल्यों के प्रति उनकी मानसिक चेतना विकसित होती है।

9. मनो–अभिनय विधि–

इस विधि में शिक्षक छात्रों के समक्ष कृत्रिम परिस्थिति उत्पन्न करता है। पुनः कृत्रिम परिस्थिति को छात्रों के समक्ष वास्तविक स्थिति में मूल्यांकन करता है। उदाहरणार्थ एक कक्षा अध्यापक छात्रों से शुल्क मुक्ति हेतु आवेदन मंगाता है। इसकी एक शर्त यह है कि अभिभावक की सम्पूर्ण श्रोत से आय 500/– रूपये प्रतिमाह से कम होनी चाहिए। 18 छात्रों ने नाम दिया जिसमें से 8 छात्रों ने गलत सूचनायें दीं। शिक्षक गलत छात्रों को इंगित करता है। यह विधि सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक धरातल पर काफी प्रासंगिक है।

10. भूमिका निर्वाह विधि–

इस विधि में शिक्षक एक पथ प्रदर्शक की भूमिका में होता है। छात्र विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। सम्पूर्ण सामाजिक समस्या की कक्षा में बहस की जाती है। तत्पश्चात् उसका मूल्यांकन किया जाता है, जो धनात्मक अभिवृत्ति विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है। (सिंह, 2002)

मूल्योन्मुख शिक्षा के उपागम–

मनुष्य में मूल्यों का विकास सामाजीकरण की प्रक्रिया के साथ–साथ होता है, लेकिन सूक्ष्म अवलोकन किया जाये, तो मूल्यों का निर्माण संस्कृतिकरण की प्रक्रिया के द्वारा होता है। सामाजीकरण व संस्कृतिकरण में मूलभूत अन्तर यह होता है कि सामाजीकरण मनुष्य के बाह्य व्यवहार से सम्बन्धित है। संस्कृतिकरण के अन्तःकरण से सम्बन्धित है और संस्कृतिकरण मनुष्य के उपागम को प्रायः प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, औपचारिक एवं अनौपचारिक व संरचित और असंरचित आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

मूल्योन्मुख शिक्षा को निम्नलिखित उपागमों में वर्गीकृत किया गया है।

(1) आलोचनात्मक खोज उपागम

(2) पूर्ण पर्यावरण उपागम

(3) एकीकृत समवर्ती उपागम

(1) आलोचनात्मक खोज उपागम–

इस उपागम के अनुसार मूल्य शिक्षा आलोचनात्मक खोज एवं मूल्यों के स्पष्टीकरण के द्वारा प्रारम्भ करनी चाहिए। मूल्य स्पष्टीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें मुख्य तीन तत्व हैं:–

1. धारण किये हुए मूल्यों के प्रति मानसिक चेतना।
2. मूल्यों का व्यवहारों के माध्यम से प्रदर्शन।
3. प्रदर्शित मूल्यों का दूसरों के समक्ष समर्थन।

इस उपागम के द्वारा छात्रों की तार्किक शक्ति का विकास होता है, जिसके फलस्वरूप स्वयं के मूल्यों के प्रति उनकी मानसिक चेतना विकसित होती है।

(2) पूर्ण पर्यावरण उपागम–

इस उपागम के अनुसार सम्पूर्ण उत्कृष्ट पर्यावरण प्रदान कर मूल्य आधारित शिक्षा दी जा सकती है। विभिन्न विषयों का अध्यापन करते हुए व्यक्ति का सामाजिक पर्यावरण पर निर्भरता का ज्ञान देकर छात्रों को अपने नम्रतम और उत्कृष्ट सम्भावनाओं सहित योगदान देने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि पाठ्यक्रमीय उपागम से प्रत्येक अध्ययनीय विषयों को छात्रों के संवेगों से जोड़ा जाये एवं सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया का सम्बन्ध शैक्षणिक सामाजिक पर्यावरण अथवा शैक्षिक पारिस्थितिकी से स्थापित किया जाय।

(3) एकीकृत समवर्ती उपागम–

एकीकृत समवर्ती उपागम संरचित एवं असंरचित उपागमों का समन्वय है। पूर्ववर्ती उपागम एक दूसरे के पूरक हैं। तात्पर्य यह है कि मूल्यों की शिक्षा हेतु आवश्यक है कि पाठ्यक्रमीय व पाठ्यसहगामी उपागमों का प्रयोग किया जा सकता है। यथार्थतः मूल्यों की शिक्षा सिखाकर नहीं बल्कि उन मूल्यों को अनुभूत कराकर उन मूल्यों को जीकर आस्था, विश्वास और मान्यता में बदला जा सकता है। अतः आलोचनात्मक खोज, मूल्य स्पष्टीकरण एवं सम्पूर्ण शैक्षिक पारिस्थितिकी ही मूल्योन्मुख संस्कृति विकसित कर सकती है।

(सिंह, 2002)

निष्कर्ष–

मूल्य उन्मुखीकरण सिर्फ सैद्धान्तिक अवधारणा मात्र न होकर एक जीवन पद्धति है, क्योंकि मानव जीवन की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए अनिवार्यतः व्यक्ति के आचरण, सोच एवं व्यवहार का मूल्योन्मुख होना अति महत्वपूर्ण है। मूल्य सैद्धान्तिक मानक है। दूसरी तरफ शिक्षा आन्तरिक रूप से तथा परिभाषात्मक रूप से मूल्योन्मुखी है, क्योंकि मूल्य विहीन शिक्षा का मूल्य अपने आप में शून्य है। वास्तव में शिक्षा संस्कृति की व्यापक संरचना का एक उपांग है और संस्कृति उन संकायों व सामर्थ्यों के विकास में सन्निहित है, जो तर्क, आचरण और सौन्दर्यशास्त्र को सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् में अन्तर्भूत मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में विकसित करने का प्रयास करती है। अतएव प्रत्येक विकसित संस्कृति अपने द्वारा संचयित जीवन नियामक पाठों के प्रसारण विधियों की प्रेरणा प्रदान करती है और यह प्रसारण विधि शिक्षा प्रणाली द्वारा सुरक्षित होती है। इस प्रकार संस्कृति एवं शिक्षा का मूल उद्देश्य अनिवार्यतः मूल्योन्मुखी होना है। निष्कर्षतः

छात्रों में सकारात्मक अभिवृत्ति परिवर्तन तकनीक विकसित कर एवं एकीकृत समवर्ती उपागम के प्रति उन्मुख कर मूल्यों के क्षरण को रोका जा सकता है एवं सामाजिक समरसता को स्थापित किया जा सकता है।

: संदर्भ सूची :

1. सिंह, देवेन्द्र : (2023) : 'श्री सत्य साईं बाबा का शिक्षा–दर्शन, सिद्धान्त एवं व्यवहार में, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
2. यादव, जे0पी0 : (2019) : श्री सत्य साईं बाबा के विचारों में निहित मूल्य शिक्षा की सांदर्भिक उपादेयता, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
3. जोशी, किरीट (2022) : फिलासफी ऑफ वैल्यू ओरिएन्टेड एजूकेशन, थ्योरी ऐंड प्रेक्टिस, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली।
4. नन्दा, आर0टी0 (2000) : कान्टेम्परोरी एप्रोचेज टू वैल्यू एजूकेशन इन इण्डिया, रीजेन्सी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/11

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

निश्चल कुमार और डॉ0 बी0आर0 कुकरेती

For publication of research paper title

"प्राथमिक स्तर पर विधर्थियों में मूल्य शिक्षा एवं अभिवृत्ति निर्माण की आवश्यकता"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com